Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A Part — II (Hons)
Paper — III
नीतिशास्त्र (Ethics)

नैतिकता का मापदण्ड "अंतः प्रज्ञावाद" (Intuitionism)

अन्तः अनुभूतिवाद के अनुसार कर्मों को देखने मात्र से उनके नैतिक गुणों का ज्ञान हो जाता है। अतः अन्तः अनुभूतिवाद वह सिद्धान्त है जिसके अनुसार कर्मों का औचित्य अनौचित्य उनके परिणाम या उद्देश्य पर निर्भर नहीं करता है बल्कि उनके आन्तरिक स्वभाव पर निर्भर करता है। कर्म स्वतः उचित या अनुचित होते हैं। नैतिक गुण कर्मों में उसीप्रकार निहित हैं जिसप्रकार भौतिक गुण कर्मों में उसीप्रकार निहित है जिसप्रकार भौतिक गुण भौतिक वस्तुओं में। अन्तः अनुभूतिवाद के अनुसार कर्मों में नैतिक गुण अन्तर्भूत हैं। वे अपने स्वभाव के कारण ही उचित या अनुचित होते हैं।

नैतिक गुण अव्युत्पन्न होते हैं। ये किसी मूल सिद्धान्त पर आधारित नहीं होते हैं। बुद्धि या किसी नियम से नैतिक गुण उत्पन्न नहीं होते। बुद्धि उचित को अनुचित और अनुचित को उचित नहीं बना सकती। जो उचित है वह उचित रहेगा और जो अनुचित है वह अनुचित रहेगा।

नैतिक गुण अनुपम होते हैं। इन्हें सत्य सौन्दर्य, सुख या सामाजिक उपयोगिता के रूप में नहीं बदला जा सकता। कोई भी कर्म अपने स्वभाव के कारण उचित या अनुचित होता है। दूसरे शब्दों में अन्तः अनुभूतिवाद प्रत्यक्षवादी सिद्धान्त है। इसके

अनुसार नैतिक कर्मों का कोई प्रयोजन या उद्देश्य नहीं होता।

नैतिक गुण वस्तुनिष्ठ होते हैं। जिसतरह नैतिक गुणों के अस्तित्व हमसे स्वतन्त्र है उसीतरह नैतिक गुणों का अस्तित्व भी हमारे विचार पर निर्भर नहीं है।

नैतिक गुण प्रागनुभाव होते हैं वे अनुभव से उत्पन्न नहीं होते। जैसे रंग आदि का हम अनुभव करते हैं किन्तु रंग अपने आप में क्या है इसका ज्ञान इन्द्रियजनित अनुभव से नहीं होता।

सुखवादियों के अनुसार किसी कर्म का अच्छा या बुरा होना उसके परिणाम या हेतु पर निर्भर है। अन्तः अनुभूतियों के अनुसार कर्म का औचित्य उसके परिणाम पर निर्भर नहीं है बल्कि हमारी नैतिक चेतना पर निर्भर है।

नैतिक गुणों का ज्ञान हमें अन्तःकरण से होता है। अब यहाँ प्रश्न उठता है कि अन्तःकरण का स्वरूप क्या है तथा यह किसतरह नैतिक गुणों का ज्ञान प्राप्त करता है? इस प्रश्न के दो उत्तर दिये गये हैं जिसके कारण अन्तः अनुभूति के दो रूप हो जाते हैं—

(i) अदार्शनिक अन्तःअनुभूतिवाद।
(ii) दार्शनिक अन्तः अनुभूतिवाद।

unphilosophical Intuitionism का कहना है कि अन्तःकरण भी एक इन्द्रिय की तरह है जो कर्मों के नैतिक गुणों को सहज ही जान लेता है। नैतिक इन्द्रिय का आधार नैतिक भावना है। इसमत को Dogmatic Intuitionism भी कहा जाता है। हचीसन सैफ्टसबरी मार्टिन्यू आदि इस मत के प्रवर्तक हैं।

समालोचना :— (i) यह सिद्धान्त कर्मों के औचित्य - अनौचित्य के लिए कोई तर्क नहीं देता है। यह नहीं बतलाता की कोई कर्म क्यों उचित है अथवा अनुचित। अतः यह सिद्धान्त तार्किक नहीं है।

(ii) यदि अन्तःकरण के आदेश युक्तिसंगत नहीं है तो हमें क्यों इनका पालन करना चाहिए ? मनुष्य विवेकशील प्राणी है। अतः जबतक उसकी बुद्धि सन्तुष्ट नहीं होती वह संतुष्ट नहीं होता और न किसी तथ्य को स्वीकार ही करता है।

(iii) यह सिद्धान्त कोई वस्तुनिष्ठ नैतिक मापदण्ड प्रस्तुत नहीं करता नैतिक निर्णय के लिए कुछ सामान्य नैतिक मापदण्ड का होना अनिवार्य है। यह सिद्धान्त ऐसे नियमों को स्वीकार नहीं करता। पर बिना इन्हें स्वीकार किए तथा विशेष कर्मों पर बिना इनका प्रयोग किए नैतिक निर्णय कैसे संभव होगा ?

इसतरह हम देखते हैं कि अदार्शनिक अन्तःअनुभूतिवाद रूढ़िवादी तथा अतार्किक सिद्धान्त है। इस मत में नैतिकता के प्रचलित विचारों को रूढ़िवादी रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अतः यह सिद्धान्त मान्य नहीं है।

Philosophical Intuitionism or Rational Intuitionism — इस मत के अनुसार अन्तःकरण के द्वारा सामान्य नैतिक नियमों का बोध होता है। जैसे बुद्धि विशेष कर्मों में लागू करती है। अन्तःकरण बुद्धिमूलक है इन्द्रिय नहीं। इस मत के अनुसार नैतिक गुण कर्मों में ही निहित है, कर्म के परिणाम या किसी अन्य लक्ष्य पर नैतिक गुण निर्भर नहीं है।

नैतिक नियमों का सामान्य नियमों के रूप में ज्ञान होता है। वे नैतिक नियमों पर आश्रित हैं। नैतिक नियम का ज्ञान Reason के द्वारा होता है। अतः नैतिक संकेत बुद्धिमूलक है कोई इन्द्रिय नहीं। बुद्धि सामान्य नैतिक नियमों का ज्ञान प्रदान करती है। प्रत्येक कर्म में नैतिक गुण का सहज बोध उसे नहीं होता।

नैतिक गुण भावना पर आश्रित नहीं है। बल्कि उनका

आधार बुद्धि है। नैतिक निर्णय के उपरान्त भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं पर हमारा निर्णय उसपर आश्रित नहीं रहता। नैतिक निर्णय का स्वरूप गणितशास्त्रीय है। इसमत के समर्थक लॉक, कालड्वड, बोलासन कांट आदि हैं।

समालोचना—

(i) उपरोक्त मत नैतिक नियमों की व्याख्या नहीं कर सकता। इसके अनुसार बुद्धि अमुक कर्म को अच्छा या खराब बतलाती है पर इसमें वह कर्म क्यों अच्छा या खराब है, इसकी व्याख्या नहीं होती है।

(ii) नैतिक नियम कैसे हैं इसका परिचय इस मत से मिलता है, पर नैतिक नियमों के विषय का ज्ञान इससे नहीं होता है। अतः यह मत आकारवादी है।

(iii) नैतिक नियमों का स्वरूप इसमत के अनुसार गणितशास्त्रीय है। पर नैतिक नियमों में भावनाओं का भी समावेश रहता है। अतः नैतिक निर्णयों से भावनाओं को बिल्कुल हटाया नहीं जा सकता है।

(iv) यदि नैतिक शक्ति को नैतिक बुद्धि मान लिया जाय तो भी उसके द्वारा आदिष्ट नियम बाह्य ही रह जाते हैं। अन्तःकरण मनुष्य की सम्पूर्ण आत्मा नहीं है। बल्कि एक विशेष शक्ति है। अतः मनुष्य के एक अंश का दिया हुआ

नियम वास्तव में बाह्य नियम ही हैं।

(v) बुद्धि के भौतिक नियम अद्भुत होते हैं पर नैतिक नियम बाह्य नैतिक आदर्श के निरर्थक हैं।

अब प्रश्न उठता है कि अन्तःकरण क्या है। उनकी विशेषताएँ क्या हैं?

(i) अन्तःकरण सरल और अव्युत्पन्न होता है।

(ii) इसके नियम सहज एवं अपरोक्ष होते हैं।

(iii) यह प्रभुत्वसम्पन्न होते हैं। यह जिस कर्म को करने का आदेश देता है वह उचित कर्म है तथा जिसे करने का आदेश नहीं देता वह अनुचित है।

(iv) अन्तःकरण सामान्य होता है। यह सभी जातियों सभी मनुष्यों में पाया जाता है। यह किसी में कम विकसित रहता है और किसी में अधिक।

(v) अन्तःकरण सेकण्डरी मूल नहीं होती है वह कर्म के निर्णय का सर्वोच्च न्यायालय है जिसके निर्णय के विरुद्ध कहीं अपील नहीं होती।

सेफ्टसबरी, हचीसन, रस्कीन, मार्टिन्यू, कुडवर्थ, क्लार्क, कांट आदि अन्तः अनुभूतिवाद के समर्थक हैं।

आक्षेप :— अन्तः अनुभूतिवाद के विरुद्ध

(i) कर्म के परिणाम, उद्देश्य तथा उद्देश्य प्राप्ति के साधन पर विचार किए बिना ही नैतिक निर्णय देना युक्तिसंगत नहीं है। अन्तः अनुभूतिवाद कहता है कि नैतिक निर्णय देने में लक्ष्य या साधन या परिणाम पर विचार अनावश्यक है। इसका यह तर्क अतार्किक एवं अमान्य है।

(ii) अन्तः अनुभूतिवाद का कहना है कि सभी व्यक्तियों को साक्षात् रूप से अन्तःकरण द्वारा नैतिक गुणों का ज्ञान होता है। अतः सभी व्यक्तियों के तथा सभी गुणों के नैतिक गुण समान होना चाहिए पर ऐसी बात नहीं पायी जाती है। विभिन्न जातियों विभिन्न गुणों तथा विभिन्न व्यक्तियों के नैतिक विचारों में बहुत अधिक विभिन्नता पायी जाती है। यही नहीं। एक ही व्यक्ति के नैतिक विचार जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में पाये जाते हैं। एक ही कर्म के सम्बन्ध में क्यों विभिन्न नैतिक निर्णय दिए जाते हैं। इन प्रश्नों का उत्तर अन्तः अनुभूतिवाद के पास नहीं है।

(iii) प्रत्येक नियम का अपवाद होता है। 'अहिंसा परोधर्मः' एक नैतिक नियम है। पर कुछ

परिस्थितियों में हिंसा करना अधर्म नहीं होता, जैसे— धर्मयुद्ध, न्यायिक दंड आदि। अतः अनुभूतिवाद में नैतिक नियम के अपवाद का कोई स्थान नहीं है।

(iv) उपर्युक्त विचार से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक नैतिक नियम के साथ परिणाम की चर्चा अत्यावश्यक है। किसी कर्म के प्रत्याशित परिणाम उस कर्म के वास्तविक अंग हैं। उन्हें उस कर्म से अलग करना सम्भव नहीं है। अतः अनुभूतिवाद किसी कर्म के परिणाम पर विचार नहीं करता। अतः यह सत्य नहीं है।

(v) अतः अनुभूतिवाद के अनुसार कर्म स्वतः उचित या अनुचित होता है। पर ऐसा मानना गलत है। कोई कर्म शीलोद्देश्य उचित है कि वह शुभ की प्राप्ति का एक साधन है। अतः शुभ ही सर्वोच्च नैतिक मूल्य है ऐसा मानना उचित नहीं जैसा कि अतः अनुभूतिवाद मानते हैं।

(vi) अतः अनुभूतिवाद नैतिकता का सामान्य तथा सर्वमान्य मापदण्ड प्रस्तुत करने में समर्थ नहीं है। चरम नैतिक मापदण्ड सभी मनुष्यों के लिए तथा सभी युगों के लिए

एक होता है, भिन्न-भिन्न-भिन्न नहीं। अन्तः अनुभूतिवाद के अन्तर्गत शुभ परम सुख के लिए कोई स्थान नहीं दिखाई देता।

इन दोषों के अतिरिक्त शुभ मत में गुण भी हैं।

(i) शुभ मत से स्पष्ट हो जाता है कि उचित कर्म ऐसे नहीं हैं, जिनसे मनुष्य का स्वार्थ सधे।

(ii) नैतिक गुण भी वैज्ञानिक सत्यों की तरह विषयगत हैं। वे व्यक्तिगत इच्छा या विचार पर निर्भर नहीं हैं।